पपिरई

मैं अपने गाँव से किसी काम के लिए पिपरई गया था। अभी गाँव में पहुँच ही गये थे तो रास्ते में बहुत सारे वाहन खड़े थे तो हम भी पीछे रूक गये। तभी देखा की मुनि श्री अविचलसागर जी महाराज जी आहारचर्या के लिए जा रहे थे।
मै जहाँ खड़ा था वही पास में जैन बंधु के यहाँ महाराज जी का पडगाहन हुआ। मुनि भी वही खड़े हुए और हम वह सब देखने लगे। हमने कभी नजदीक से दिगम्बर साधुकोनही देखा था, सो आज अवसर मिला तो वही किनारे खड़े हो गये और देखने लगे महाराज जी को मेरे आस-पास और भी लोग खड़े थे। वह भी सारी क्रियायें देख रहे थे। और तभी मुनिराज अविख्लसागर जी की परिक्रमा देने लगे जो वहाँ पहले से खड़े थे।
और तभी अचानक मुझे अविचलसागर जी के गर्दन के आस-पास सर के पीछे शरीर निकलती हुई रोशनी नजर आयी।

पहले तो वह रोशनी काफी धुंधली सी थी लेकिन उसकी रोशनी बढ़ती ही गई और मेरी आँखकं उस रोशनी से चमकने लगी, वह रोशनी और तेज और ज्यादा फेलने लगी। महाराज जी की पूरी गर्दन और सर उस रोशनी से चमक उठा और वह रोशनी गोलचक्र मे परिवर्तित हुई। और यह सब हो ही रहा था तभी मुनिराज जी का एक हाथ जो उनके कंधे पर था उस हाथ से भी रोशनी निकलने लगी और वह भी उसी रंग मे थी ‘‘केसरिया रंग’’ जैसे प्रात: कालीन उगते हुए सूरज की मीठी -मीठी रोशनी हो।
जब मुझे यह सब दिख रहा था तभी पास में खड़े और लोगों को भी मैने पूछा की भाई आपको महाराज जी के सर के पीछे रोशनी दिख रही क्या तो दो-चार लोगों ने मना किया।
लेकिन मुझे विश्वास था कि जो मुझे दिख रहा है वह बिलकुल हकीकत है क्योंकि यह कोई स्वप्न या आँखों का धोका नहीं था।
मै काफी खुश हुआ था ऐसा लगा जैसे साक्षात राम भगवान के दर्शन हुए हो। क्यों कि ऐसी घटनाएँ और दिव्य रोशनी सिर्फ मान दिव्य पुरूष में ही हो सकती है।

हम वही रुक गये जहाँ महाराज जी के आहार हो रहे थे। और हमने पूरे आहार देख लिया। आहार के बाद महाराज जी पुन: जैन मंदिर चले गये और एसके बाद हम उन जैन बंधु जो मेरे पहले से ही परिचित में थे एनके पास जाकर हमने अपनी देखी हुई बात बताई तो उन सबको बहुत आश्चर्य हुआ और प्रसन्न भी हुए। और तभी एस परिवार के एक सदस्य ने मुझे रोका और कहा की भाईसाहब जो जो इभी आपको दिखा मुनिश्री में वह सब हमारे भी कुछ भाई -बहनों को मंदिर में जब मुनिश्री क्लास लेते है पाटे पर बैठ जाते है तब उनके शरीर मे से दिव्य रोशनी निकलती हुई दिखती है।

और मुझे बहुत आश्चर्य हुआ की जब हम आज पहली बार ही मुनिश्री को देखा है कभी पहले नहीं देखा न जानते थे। और हमें उनके दिव्य रूप का साक्षात्कार हुआ कोई दिखता तो जरूर है मुनि में नही तो ऐसा एक ही दिव्य रूप बहुत लोगों के सामने प्रगट नहीं होता।

यह सब सुनने के बाद मुझे विश्वास हुआ की जो हमने देखा अनुभव किया
अपने आँखों से साक्षात वह सत्य है
और फिर हम अपने काम के लिए निकल गये। उसके बाद हमारे जीवन में काफी परिवर्तन आया,आज के युग में कहाँ मिलते है ऐसे दिव्य पुरुष ग्रंथो मे पढा था और सुना था। इस अनुभव के बाद भी कई बार रात्रि के समय में अनेक
दिव्य दृश्य दिखने लगे हर बार जो भी दृश्य दिखता था
उसमें मुनिश्री अविचल सागर जी विराजे हुए रहते है
और उनके शरीर से निकलती
हुई दिव्य रोशनी और कभी उनके निकट मोर, सर्प आदि दिखाई देते है।

‘‘ ओम् शान्ति’’